English

setuu अध्याय 14

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

वास्तविकता क्या होती है , श्री हनुमान जी ने अन्वेषण किया

एक अंतराल के बाद चरण पूजा का चौथा सत्र शुरू हुआ | इस सत्र की यजमान थी जानकीरुपा नामक एक मातंग महिला | उसकी आत्मा को पवित्र करने के लिए हनुमान जी ने ज्ञान के निम्नलिखित शब्द बोले :

हनुमान जी बोले – "हे मातंगों , मैं आपको सुलोचना नामक एक भक्त की कथा सुनाता हूँ | अब वह एक बुद्धिमान प्रौढ़ महिला है लेकिन किशोर अवस्था में वह एक साधारण नादान लड़की थी | उसकी माता श्री विष्णु जी की सच्ची भक्त थी | इसलिए उसकी माता और उसके परिवार की सुरक्षा की जिम्मेदारी मेरी थी |

"एक मानव देह-मन को किशोर अवस्था में सबसे ज्यादा असुरों का खतरा रहता है | असुर पहले देह , फिर मन, फिर विवेक , और अंततः संस्कारों पर कब्जा करने की कोशिश करते हैं | अगर असुर किसी के संस्कारों पर कब्जा कर ले तो उस मनुष्य का देह-मन सदा के लिए असुरों का घर बन जाता है | फिर असुरों से पीछा छुड़ाना लगभग असंभव हो जाता है | अगर हम किसी मनुष्य की तुलना राज्य से करें तो संस्कार उस राज्य का मुख्य किला होता है | अगर वह किला जीत लिया जाए तो राज्य जीत लिया जाता है | किशोर अवस्था में वह किला निर्माणाधीन होता है | इसलिए किशोरों को असुरों से सबसे अधिक खतरा रहता है | वही समय होता है जब मनुष्य स्वतंत्र विचार विकसित करना शुरू करता है | वही समय होता है जब असुर अपने बुरे विचार मनुष्य के मस्तिष्क में रोपित करने की कोशिश करते हैं |

"सुलोचना भी एक साधारण किशोर थी | उसने एक ऐसे पुरुष से दोस्ती कर ली जो पुरुष वास्तव में पुरुष की देह में असुर था | वह पुरुष उसे उसके माता पिता की देख रेख से दूर ले गया |

"हे मातंगों , यहाँ पर आपको यह समझना आवश्यक है कि असुर कैसे कार्य करते हैं | वह पुरुष पूर्णतः असुरों के कब्जे में था | अर्थात उसके देह -मन – विवेक -संस्कार सब पर असुरों का कब्जा था | उन असुरों ने (उस पुरुष के अन्दर के असुरों ने) एक नादान किशोरी को देखा | उन्हें वहां पर बुराई करने का अवसर दिखाई दिया | अतः उनमे से एक असुर उस पुरुष के देह-मन से बाहर निकलकर उस किशोरी के देह-मन में घुस गया |

"यह किला जीतने की तरह होता है | अगर सिपाहियों का एक समूह किसी किले पर कब्जा करना चाहता है तो उनमे से एक सिपाही पहले धोखे से किले के अन्दर घुसेगा और अन्दर से दरवाजा खोल देगा ताकि बाकी सिपाही अन्दर घुस सकें | उन असुरों ने भी यही रणनीति अपनाई | उनमे से एक असुर सुलोचना के देह-मन में घुस गया | उस असुर ने सुलोचना के मन को कुछ इस तरह प्रभावित किया कि वह उस पुरुष की ओर आकर्षित हो गई और उसका उस पुरुष पर पूर्ण विश्वास हो गया |

"उसी समय मैंने सुलोचना की माँ को इस बारे में चेताया क्योंकि उसकी माँ मुझसे भक्ति की डोर से बंधी थी | मैंने उसकी माँ के मस्तिष्क में यह विचार भर दिया कि उसे अपनी पुत्री पर नजर रखने की आवश्यकता है | मैं सीधे सुलोचना को इस बारे में नहीं चेता सका क्योंकि वह उस समय मुझसे भक्ति की डोर से नहीं जुडी थी |

"मेरी चेतावनी के पश्चात् उसकी माँ को उसकी गतिविधियों पर नजर रखने का विचार अवश्य आया लेकिन उस विचार पर उसकी ममता हावी हो गई | उसने सोचा – "मेरी बच्ची समझदार है | वह कुछ गलत नहीं कर सकती |"

"मैंने उसकी माँ को बार बार चेताया किन्तु हर बार उसकी ममता हावी हो गई |

"सुलोचना के मन पर एक असुर ने कब्ज़ा कर लिया था जिसके कारण उसे उस पुरुष पर भरोसा हो गया और वह उसके जाल में फंस गई | जब किसी मनुष्य के देह-मन को असुर चालित कर रहे हो तो उस मनुष्य की आत्मा को शक भी नहीं होता | सुलोचना ने बहुत सारी गलतियाँ की और उसे इस बात का तनिक भी भान नहीं था कि वे गलतियाँ उसने नहीं अपितु उसके अन्दर बैठे एक असुर ने की थी | उसने असुर के कृत्यों को अपना मानकर उन्हें अपने ऊपर ले लिया | अजागरूक मनुष्य यही गलती करते हैं | असुर उनकी देह का प्रयोग करके गलत काम करते हैं और वे सोच लेते हैं कि वे गलत काम असुर ने नहीं बल्कि खुद उन्होंने किये हैं | वे उन गलत कामों को अपने ऊपर ले लेते हैं और फिर परिणाम भुगतते हैं |

"सुलोचना को वह पुरुष बहका ले गया और उसने अपने साथियों के साथ मिलकर उसकी देह का निर्दयता से उल्लंघन कर दिया | उसके माता पिता ने उसे अचेत अवस्था में पाया |

"हे मातंगों , जब कोई देह घायल होती है तब उस देह को ठीक करने के लिए सबसे पहली आवश्यकता होती है कि उस देह में रह रही आत्मा को देह ठीक करने की इच्छा होनी चाहिए | अगर आत्मा ही देह को ठीक नहीं करना चाहती तो विश्व की आरोग्यकर शक्तियां उसे ठीक करने में कोई रूचि नहीं दिखाती और देह की क्षति होती जाती है तथा अंततः मर जाती है | जब सुलोचना की देह घायल हुई तब उसकी आत्मा को देह से घृणा हो गई थी | आत्मा को उस देह में रहने की कोई इच्छा नहीं थी | परिणामस्वरूप वह कोमा में थी और उसकी देह की तीव्रता से क्षति हो रही थी | उसकी माता इस बारे में बहुत दुखी थी | वह अनवरत चमत्कार के लिए प्रार्थना कर रही थी |

"उसको बचाने के लिए मैंने भगवन विष्णु जी से प्रार्थना की कि वे विष्णुलोक से कोई आत्मा सुलोचना की देह में प्रवेश करने के लिए भेजें | क्योंकि उसकी अपनी आत्मा उसकी देह को स्वीकार नहीं कर रही थी |

"जैसा कि आपने पहले सीखा , विष्णुलोक में ऐसी बहुत सी आत्माएं हैं जो मोक्ष प्राप्त करने से केवल एक कदम पीछे रह गई | ऐसी आत्माएं सोचती हैं कि विष्णुलोक ही अंतिम मंजिल है | भगवन विष्णु जरुरत पड़ने पर ऐसी आत्माओं को नश्वर संसारों में भेजते हैं | जब आवश्यकता पड़ी , दीर्घा नाम की एक आत्मा को सुलोचना की देह को धारण करने के लिए भेजा |

"जब दीर्घा की आत्मा सुलोचना की देह धारण करने वाली थी तो मैंने उसे चेताया | मैंने कहा – "हे दीर्घा ! सावधान | तुम काल-अस्तित्व के जाल में कदम रखने जा रही हो | जैसे ही तुम सुलोचना की देह धारण करोगी , तुम सुलोचना की पहचान धारण कर लोगी | तुम्हे यह याद नहीं रहेगा कि तुम दीर्घा हो | तुन्हें यह याद नहीं रहेगा कि तुम्हे यहाँ विष्णुलोक से सुलोचना के आरोग्य के लिए भेजा गया है |

"उसने उत्तर दिया – "हे प्रभु , मैं इस जाल से सावधान रहूंगी | काल – अस्तित्व के जाल से विजय पाकर ही मैंने विष्णुलोक में स्थान बनाया है | इसलिए , यह जाल मुझे मूर्ख नहीं बना सकेगा |"

"मैं बोला – "हे नादान , तुम्हारे इस अहंकार के कारण ही तो तुम विष्णुलोक में फंसी हुई हो और तुमने मोक्ष नहीं पाया है | भगवान् विष्णु जी ने तुम्हे यह काम इसीलिए सौंपा है क्योंकि इससे तुम्हे मोक्ष प्राप्त करने में सहायता मिलेगी | अगर तुम इस जाल में फंस जाती हो तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा | परमेश्वर का नाम लो और कार्य प्रारंभ करो |"

"जैसे ही दीर्घा की आत्मा ने सुलोचना की देह धारण की , उसकी सेहत में सुधार आने लगा | कुछ महीनो बाद , न केवल उसकी देह अपितु उसका मन तथा विवेक भी सामान्य हो गया | अब उसका मन उस भयानक घटना से उभर गया था |

“अब दूसरी समस्या शुरू हो गई | जैसे ही सुलोचना के देह- मन सामान्य हुए , उसकी आत्मा की देह के प्रति घृणा समाप्त हो गई | अब उसकी आत्मा उसकी देह में लौटना चाहती थी लेकिन उसकी देह में तो अब दीर्घा की आत्मा रह रही थी |

“मैंने अपेक्षा की थी कि जैसे ही सुलोचना की आत्मा उसकी देह को धारण करने के लिए तैयार हो जायेगी , दीर्घा की आत्मा वापिस विष्णुलोक में आ जाएगी | लेकिन दीर्घा अपनी पहचान खो चुकी थी | अब सुलोचना ही उसकी पहचान बन गई थी | काल -अस्तित्व के जाल ने उसे फंसा लिया था |

“जब दो आत्मा एक ही देह के लिए लडती हैं तो देह को अत्यधिक पीड़ा होती है | सुलोचना और दीर्घा की आत्मा के बीच लड़ाई के कारण उसकी देह अत्यधिक पीड़ा में थी | वह रातों को सो नहीं पाती थी | दिन में भी उसे अत्याधिक शारीरिक और मानसिक पीड़ा होती थी और वह अजीब व्यवहार करती थी | लोग कहते थे कि उसको भूतों ने जकड लिया है | कुछ लोग कहते थे कि उस पर पिशाच हमला कर रहा है | उसके माता पिता उसे कई जगह ले गए लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ | सभी झाड फूंक करने वाले यही सोचकर अपने टोटके करते थे कि उस पर कोई बुरी आत्मा का साया चढ़ गया है | लेकिन हकीकत यह थी कि उसकी अपनी आत्मा अपनी देह को वापिस पाने की कोशिश कर रही थी | उन्हें समस्या के मूल का भान नहीं था इसलिए उनके टोटके समस्या को ओर ज्यादा बढाते जा रहे थे |

“जब कोई सामान्य आत्मा काल – अस्तित्व के जाल में जकड़ी होती है तो उसे सत्य पहचानने के लिए कई जन्म लग जाते हैं | लेकिन दीर्घा साधारण आत्मा नहीं थी | उसने विष्णुलोक में अपना स्थान बना रखा था | इसलिए उसे उस जाल से निकालने के लिए केवल हलके से प्रयास की आवश्यकता थी | केवल एक ज्ञानी गुरु ही ऐसा कर सकता था , कोई झाड फूंक वाले नहीं |

“मैंने दीर्घा के साथ आत्म संपर्क साधने का प्रयास किया लेकिन उसकी आत्मा का मेरे साथ संपर्क पूर्णतः कट चूका था | अब मेरे पास शारीरिक रूप धारण करने के अलावा कोई उपाय नहीं था |

“मैंने एक घुमक्कड़ साधू की देह धारण की और सुलोचना के दरवाजे पर पहुँच गया | उसकी माता बहुत ही सज्जन महिला थी | मैंने उससे खाना खाने की इच्छा जताई तो वे मुझे सम्मान के साथ अन्दर ले गई और खाना परोसा | जब मैंने उसे आशीर्वाद देना चाहा तो वे बोली कि आशीर्वाद उसे नहीं उसकी बेटी सुलोचना को दे दीजिये | मैं भी यही चाहता था | उसने मुझे सुलोचना के बारे में बताया जो उस समय एक कमरे में बंद थी |

“सुलोचना उस कक्ष का दरवाजा अन्दर से पीट रही थी | यह उसका रोज का काम था | वह हिंसक रूप धारण करके आस पास की चीजों को तब तक पीटती रहती थी जब तक कि वह थक कर निढाल नहीं हो जाती | मैंने तब तक बाहर इन्तजार किया जब तक कि उसने दरवाजा पीटना बंद नहीं कर दिया | उसके बाद मैंने दरवाजा खोला तो उसे फर्श पर निढाल सोये हुए पाया | अर्थात उस समय दोनों आत्माएं उसकी देह से दूर स्वपनलोक में थी |

“मैंने सुलोचना की आत्मा को स्वपनलोक में व्यस्त रखने का प्रबंध कर दिया ताकि मैं दीर्घा की आत्मा से रूबरू हो सकूँ | जब वह जागी तो उसकी देह में केवल एक आत्मा थी – दीर्घा की आत्मा |

“दीर्घा मुझे जानती थी | लेकिन वह एक अस्थायी भ्रम में थी | जब उसने मेरी आँखों में देखा तो उसे कुछ जाना पहचाना सा लगा | मैंने उससे पूछा – “तुम कौन हो बच्चे?”

“उसने तुरंत उत्तर दिया, यद्यपि थोड़ी झिझक और भ्रम के साथ – “प्रणाम बाबा ,मैं सुलोचना हूँ |”

“मैंने दरवाजा बंद कर दिया और उसकी माता को वहां से दूर चले जाने को कहा | मैंने रहस्यमयी तरीके से उसके कान में फुसफुसाया – “तुम सुलोचना नहीं , दीर्घा हो |”

"उसका मन आतंकित हो उठा | मेरा उद्देश्य उसके मन की पकड़ को ढीला करना था ताकि वो मन के साथ अपनी पहचान बिठाने की बजाए आत्मा से अपनी पहचान बैठाये | मैंने उसे वही उसी भ्रम की स्थिति में छोड़ दिया और कक्ष से बाहर निकल आया | मैंने उसकी माता को बताया कि मैं अगली सुबह फिर आऊंगा |

"भगवान् इंद्र ने मुझे सूचित किया कि वे सुलोचना की आत्मा को ज्यादा देर तक स्वपनलोक में नहीं रख पायेंगे | वह फिर वापिस आएगी और अपनी देह को पाने की कोशिश करेगी | मैंने भगवान् इंद्र से आग्रह किया कि वे कम से कम एक दो दिन उसे स्वपनलोक में ही रखे ताकि दीर्घा अपनी पहचान की पुष्टि के लिए अकेले में थोडा संघर्ष कर सके |

"जब वह (सुलोचना की देह, दीर्घा की आत्मा) कक्ष से बाहर आई , वह अत्यंत शांत थी | वह चीजों को ऐसे सावधानी से देख रही थी जैसे सब कुछ नया हो | वह अपनी असली पहचान ढूंढ रही थी |

"वह अपने घर से बाहर गई और उस मैदान का निरिक्षण किया जहाँ पर वह बचपन में खेला करती थी | उसे वह स्थान अच्छे से याद था जहाँ पर उसे खेलते हुए चोट लगी थी | वह अपनी उस याद को अपने पैर के चोट के निशान के साथ जोड़ सकती थी | अभी वह किशोरी ही थी और उसके मन में बचपन की यादें अब भी ताजा थी | वह अपने पड़ोस के मित्रो से मिली | वह उस पेड़ के पास गई जिसके नीचे वह खेला करती थी | संसार का हर कोना उसे यह कह रहा था कि वह सुलोचना थी |

"मेरे द्वारा उसके कान में फुसफुसाए गए शब्द इतने ताकतवर थे कि वह शाम तक अपनी इस खोज में लगी रही | वह अपनी माँ के साथ कक्ष में सोया करती थी | सोने से पहले वह टूट गई | रोते हुए से बोली – "माँ , मैं इन बाबा लोगो से तंग आ चुकी हूँ | इनमे से किसी को भी मेरी समस्या का पता नहीं चल रहा है | आज जो बाबा आये थे उन्होंने कहा कि मैं सुलोचना नहीं , दीर्घा हूँ | यह कैसे संभव है ? क्या आपको याद नहीं कि आपने मुझे जन्म दिया था ? क्या आपको याद नहीं कि मैंने इसी घर में अपना बचपन गुजारा है ? कृपा मुझे इस एक ओर यातना में न डाला करें | मैं पहले से ही पीड़ा में हूँ | कृपा इन बाबा लोगो का मेरे साथ प्रयोग करना बंद करें , मैं आपसे भीख मांगती हूँ |"

"उसकी माँ भी रो पड़ी और वादा किया – "मैं आज के बाद किसी बाबा से सहायता नहीं मांगूंगी | मैं केवल भगवान् विष्णु से प्रार्थना करुँगी | तुम मृत्यु शैया पर थी तब उन्होंने तुम्हे नई जिन्दगी दी थी | मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे तुम्हे इस समस्या से भी ठीक कर देंगे |"

"उस पूरे दिन और रात वह पूर्णतः शांति में रही क्योंकि उसकी दूसरी आत्मा यानि उसकी अपनी आत्मा को इंद्र भगवान् ने स्वपनलोक में व्यस्त कर रखा था | इसलिए दो आत्माओं के बीच की लड़ाई उस दिन नहीं हुई |"

"अगले सुबह मैं उसके घर घुमक्कड़ संत के रूप में फिर पहुँच गया | उसकी माँ ने बहुत ही ठंडा स्वागत किया | जब वह चाय का कप लेकर आई तो मैंने पूछा – "सुलोचना कैसी है?"

"उसने झिझक से उत्तर दिया – "बाबा , वह अपने एक रिश्तेदार के यहाँ गई है |"

"जिस संघर्ष के साथ उस भली औरत ने वह छोटा सा झूठ बोला, मुझे हंसी आ गई | मैं बोला – "देवी , सुलोचना कल रात एक अरसे बाद शांति से सोई है , है ना ? आज मुझे उससे कुछ मिनट बात करने दीजिये उसके बाद उसकी समस्या हमेशा के लिए ख़त्म हो जायेगी |"

"वह मान गई |

“मैंने सुलोचना के कक्ष में प्रवेश किया तब वह सो रही थी | वह सपने में झूला झूल रही थी | अचानक झूला टूट गया , उसकी देह को झटका सा लगा और वह उठ गई |

“उसने मुझे अपने पलंग के पास बैठा पाया | मैंने मजाक में कहा – “शुभ समाचार , वह मात्र एक सपना था | यहाँ कोई झूला नहीं है | तुम वास्तविकता में नहीं गिरी हो |”

“उसे नहीं पता था कि वह कैसे प्रतिक्रिया दे | वह सोच रही थी – “इन बाबा को कैसे पता कि मैं क्या सपना देख रही थी ? निश्चय ही ये कोई साधारण बाबा तो नहीं है |”

“अब वह मुझसे श्रद्धा और विश्वास की डोर से बंध गई थी | मैंने उससे अपने सपने का वर्णन करने को कहा | वह बोली – “मैं एक ऊंटगाडी में बैठी थी और मेरे पापा उसे चला रहे थे | मैं और मेरे पाप खेतों में जा रहे थे | तब मैंने देखा कि मेरे बगल में एक अजीब सा इंसान बैठा था | उसने अपना चेहरा कम्बल से ढक रखा था | वह धीरे से मेरे कानो में फुसफुसाया – ‘तुम शर्मीला नहीं हो , तुम सुलोचना हो |’ .. और फिर …”

““शर्मीला? अब ये शर्मीला कौन है?” मैंने पुछा |

““पता नहीं … वह मुझे शर्मीला बुला रहा था |”

““तो यहाँ पर तुम्हारा नाम सुलोचना है लेकिन सपने में तुम्हारा नाम शर्मीला था ? और वह तुमसे कह रहा था कि तुम शर्मीला नहीं , सुलोचना हो | तुमने उसे क्या उत्तर दिया?” मैंने पूछा |

“वह बोली – “मुझे अच्छे से याद नहीं है बाबा | हाँ … मैं चिल्लाई … जोर से चिल्लाई …. मै बोली मैं सुलोचना नहीं हूँ , मैं शर्मीला हूँ |”

““तुमने ऐसा क्यों कहा ? तुम तो सुलोचना हो न? तो तुमने क्यों कहा कि तुम शर्मीला हो, सुलोचना नहीं ?” मैंने पुछा |

“अब वह भ्रमित थी | बोली – “बाबा , मुझे नहीं पत्ता कि सपने में मेरा नाम शर्मीला क्यों था | वहां पर मैं दृढ़मत थी कि मैं शर्मीला हूँ , सुलोचना नहीं |”

““और यहाँ पर तुम दृढ़मत हो कि तुम सुलोचना हो | वास्तविकता क्या है ? तुम कौन हो ? क्या तुम सुलोचना हो जैसे कि लोग तुम्हे यहाँ पुकारते हैं | क्या तुम शर्मीला हो जैसा कि सपने में तुम्हे पुकारा जा रहा था | या तुम दीर्घा हो जैसा कि मैं तुम्हे बता रहा था |”

““क्या यह भी कोई सपना है ? क्या हम इस समय किसी सपने में हैं ? क्या कही ओर एक अन्य वास्तविकता है जहाँ पर मेरा नाम दीर्घा है ?”

“मैं बोला – “प्रश्न केवल नाम का नहीं है | क्या तुम्हे याद है कि सपने में तुम्हारा रूप कैसा था ? तुम्हारे पिता ऊंट गाडी में तुम्हारे साथ बैठे थे , क्या तुम्हे उनका चेहरा याद है ? क्या तुम्हारे सपने वाले पापा यहाँ वाले पापा जैसे दिख रहे थे ?”

“उसने उत्तर दिया – “बाबा, मुझे नहीं पता मैं कैसी दिख रही थी क्योंकि वहां पर कोई आइना नहीं था | लेकिन हाँ … मेरे पापा का चेहरा … म्मम्मम … हाँ … अजीब चेहरा था | लेकिन जब मैं सपने में थी तब मेरा दृढ़मत था कि वही मेरे पापा है | सपने में मुझे उनके चेहरे में कुछ अजीब नहीं लगा | … हे

बाबा ... उत्तर दो ... क्या अब भी हम किसी सपने में हैं ? क्या कही एक वास्तविकता है जहाँ मैं दीर्घा हूँ, सुलोचना नहीं | मुझे अजीब सा डर सता रहा है | मेरी असली पहचान क्या है ?"

"मैंने उसे सांत्वना दी – "धैर्य रखो मेरे बच्चे | तुम्हे शीघ्र ही पता चल जाएगा कि तुम कौन हो | पहले मुझे बताओ कि सपने में आगे क्या हुआ | तुम ऊंट गाडी में बैठी थी अपने पापा और एक अजनबी के साथ | तुम्हारे चिल्लाने के बाद क्या हुआ?"

"उसने उत्तर दिया – "बाबा , उसके बाद अचानक मैं ऊंट गाडी चला रही थी | अब मेरे पापा और वो अजनबी गाडी में नहीं थे | उसके बजाए वहां पर मेरे पड़ोस के बच्चे बैठे थे | मैं उनको मेले ले जा रही थी |"

"मैं बोला – "तुम्हारे पिता और वो अजनबी अचानक कहाँ चले गए ? तुम इस समय अपने बिस्तर में हो | क्या होगा अगर तुम अपने आपको अचानक रसोई में पाओगी ? क्या तुम पगला नहीं जाओगी कि तुम अपने कमरे से रसोई में अचानक कैसे पहुंची ? अगर तुम्हे रसोई में पहुंचना है तो तुम्हे बिस्तर से उठकर रसोई की ओर चलना पड़ेगा | यही इस संसार का नियम है | यहाँ पर एक घटना दूसरी घटना तक पहुंचाती है | लेकिन सपने में घटनाओं के बीच रिक्त स्थान होता है | लेकिन फिर भी तुम वहां पगला नहीं जाती क्योंकि वैसा होना सपनो में सामान्य बात है |"

"उसने टिप्पणी की – "इसीलिए उन्हें सपने कहा जाता है बाबा | सपनो में कोई संगतता तथा अनवरतता नहीं होती | यहाँ , वास्तविकता में संगतता है | इसीलिए इसे वास्तविकता कहते हैं और उसे सपना |"

"मैंने उत्तर दिया – "वहां , सपनो में , असंगतता ही नियम है | जब तुम सपनो में होती हो तो तुम असंगतता होने पर पगला नहीं जाती | क्योंकि वह वहां पर नियम है , वह वहां पर होना सामान्य बात है | सपने भी एक वास्तविकता है जिनके अपने नियम हैं | वहां पर तुम्हारी पहचान शंर्मिला थी , ठीक वैसे ही जैसे कि यहाँ पर तुम्हारी पहचान सुलोचना है | और भी एक वास्तविकता है जहाँ पर तुम्हारी पहचान दीर्घा है | तुम उस पहचान के बारे में भूल गई हो | तुम्हारा सुलोचना के रूप में किरदार समाप्त हो गया है , अब तुम्हे दीर्घा के किरदार में वापिस लौटना है |"

"उसने पुछा – "बाबा, मुझे सपने वाली शर्मीला के बारे में तो याद है लेकिन दीर्घा के बारे में याद क्यों नहीं है ?"

"मैंने उत्तर दिया – "वास्तविकताएं लोगो की तरह होती है | यहाँ पर बैठे बैठे तुम बहुत सारे लोगो को महसूस कर सकती हो | सबसे ज्यादा तुम मुझे महसूस कर सकती हो क्योंकि तुम मुझे सुन सकती हो , देख सकती हो , छु सकती हो |

तुम्हारे माता पिता साथ वाले कक्ष में बैठे हैं | तुम उन्हें भी महसूस कर सकती हो , लेकिन थोडा कम | तुम उन्हें देख नहीं सकती , छु नहीं सकती , लेकिन उन्हें आपस में बतियाते हुए सुन सकती हो |

उसके बाद पड़ोस में तुम्हारी एक दोस्त बैठी है | तुम उसे देख नहीं सकती , सुन भी नहीं सकती , लेकिन हाँ अपने दिमाग में उसकी कल्पना अवश्य कर सकती हो |

और फिर लाखों लोग हैं इस दुनिया में जिन्हें तुम कल्पना में भी महसूस नहीं कर सकती |

वास्तविकताएं भी कुछ ऐसे ही हैं | अगर कोई वास्तविकता तुम्हारी वर्तमान वास्तविकता से नजदीक है , उसे तुम सबसे ज्यादा महसूस कर सकती हो | जब तुम सपने देखती हो , तुम बहुत सारी वास्तविकताओं में जाती हो | उन सभी वास्तविकताओं को सामूहिक रूप से स्वपनलोक कहते हैं | तुम उन वास्तविकताओं जो यहाँ से बहुत दूर हैं की घटनाओं को याद नहीं रख सकती | तुम्हे अपने सारे सपने याद नहीं रहते | तुम्हे वही सपने याद रहते हैं जो नजदीक की वास्तविकताओं में घटित होते हैं |

वह वास्तविकता जिसमे तुम 'दीर्घा' हो , वह तुम्हारी इस वास्तविकता से बहुत दूर है | इन दो के बीच कोई रिश्ता नहीं है | ये दोनों वास्तविकताएं एक दुसरे की अपवर्जक हैं | यही कारण है कि जब तुम इस वास्तविकता में हो तो तुम्हे उस वास्तविकता का तनिक भी भान नहीं है |"

"उसने पूछा – "बाबा , मैं स्वपनलोक की वास्तविकताओं में सोने के बाद पहुँच सकती हूँ | लेकिन उस वास्तविकता में पहुँचने का क्या मार्ग है जहाँ पर मैं दीर्घा हूँ ?"

"मैंने उत्तर दिया – "हे दीर्घा , उस वास्तविकता का नाम विष्णुलोक है | तुम एक आत्मा हो जो बहुत सारे जन्मो के बाद अंततः विष्णुलोक पहुंची हो | विष्णुलोक से तुम्हे यहाँ पर अस्थायी तौर पर एक देह को ठीक करने भेजा गया था | विष्णुलोक में वापिस जाने के लिए तुम्हे इस वास्तविकता से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ने होंगे | जैसे ही तुम ऐसा कर लोगी , तुम विष्णुलोक पहुँच जाओगी |"

""तब इस देह का क्या होगा ? क्या मैं मर जाउंगी?"

""तुम्हे वह सब यहाँ छोड़ना होगा जो इस वास्तविकता का है | तुम्हारी इस देह के बारे में चिंता भी इसी वास्तविकता से सम्बन्ध रखती है | तुम्हे इस चिंता को यही छोड़ना होगा |" मैंने उत्तर दिया |

""लेकिन मेरे परिवार का क्या होगा ? मैं अपने परिवार को नहीं छोड़ सकती | मैं अपने माता पिता को नहीं छोड़ सकती |"

"मैं अपनी आवाज में थोडा सा क्रोध ले आया और बोला – "पिछले कुछ मिनटों में मैं तुम्हारी चेतना को ऊपर उठाने की कोशिश कर रहा हूँ और तुम हो कि बार बार नीचे अज्ञानता में गिरे जा रही हो | तुम्हारे सपनो में तुम्हारा एक अलग पिता था, था कि नहीं ? तुमने उसे वही छोड़ दिया और यहाँ चली आई | हर वास्तविकता में कुछ लोग होंगे जिनसे तुम्हारे कुछ सम्बन्ध होंगे | उन संबंधो को उन्ही वास्तविकताओं में छोड़ना होता है | जब तुम एक वास्तविकता से दूसरी वास्तविकता में स्थानातरित होती हो तो एक वास्तविकता की चीजे दूसरी वास्तविकता में नहीं ले जा सकते | इन माता पिता के बारे में चिंता छोड़ दो | जिस वास्तविकता में तुम स्थानांतरित होने वाली हो वहां श्री विष्णु ही तुम्हारे सब कुछ है | तुम्हे इन माता पिता के बारे में वहां पर याद तक नहीं रहेगा |"

"उसने झिझकते हुए कहा – "बाबा , मैं आपसे यह आश्वासन चाहती हूँ कि मैं इस वास्तविकता में मरूंगी नहीं ; और मेरा परिवार शोक नहीं करेगा जब मैं इस वास्तविकता को छोड़ उस वास्तविकता में जाउंगी |"

"मैंने बलपूर्वक कहा – "नहीं , मैं ऐसा कोई आश्वासन नहीं दूंगा क्योंकि वो आश्वासन एक ऐसी बेल बन जाएगा जो तुम्हे यहाँ पर बांधे रखेगी | आश्वासन और चिंता में कोई फर्क नहीं है | दोनों इसी वास्तविकता की चीजे हैं | तुम्हे चिंता और आश्वासन दोनों छोड़ने होंगे | प्रश्न – उत्तर , प्यार – घृणा , पसंद – नापसंद , विश्वास – अविश्वास , आशा – निराशा , चिंता – आश्वासन , सुख -दुःख , आदि सब इसी वास्तविकता से हैं | अगर तुम इनके चक्कर लगाती रहोगी तो तुम्हे तो लगेगा कि तुम आगे बढ़ रही हो लेकिन तुम इस वास्तविकता से एक इंच भी दूर नहीं जाओगी | तुम्हे इन पूरकों से पीछा छुड़ाना होगा | मुझसे किसी आश्वासन की मांग मत करो | हर उस चीज से अपना पीछा छुड़ा लो जो तुम्हे यहाँ बांधकर रखे हुए है | मैं भी इसी वास्तविकता का हिस्सा हूँ , मुझसे भी अपना सम्बन्ध तोड़ लो |"

"मैं अपने शब्द इतनी रहस्यमयी तरीके से बोल रहा था कि वे उसकी आत्मा को झकझोर रहे थे | उसे अपने आस पास की सब चीजें अजीब लगने लगी | वह एक उन्नत आत्मा थी | उसने 'सुलोचना' की पहचान से अपने आपको शीघ्र ही अलग कर लिया और विष्णुलोक लौट गई |"

"विष्णुलोक में उसने अपने सामने मुझे , भगवान विष्णु और माँ लक्ष्मी को पाया | वह बोली – "हे परमेश्वर, क्या विष्णुलोक भी मात्र एक वास्तविकता नहीं है ? क्या यह वास्तविकता अन्य वास्तविकताओं से अच्छी है?"

"नहीं, अच्छी नहीं है |" भगवान् विष्णु मुस्कुराकर बोले |

“दीर्घा ने अंतत विष्णुलोक से भी सम्बन्ध तोड़ लिया | उसने अपनी दीर्घा वाली पहचान भी त्याग दी और परमपूर्ण के साथ एकाकार हो गई – मुक्तिसागर में मिल गई ... उसे मोक्ष मिल गया |”

“भगवान् विष्णु ने इन शब्दों के साथ मुझे आशीर्वाद दिया – “हे प्रिये हनुमान , हमेशा की तरह मैंने तुम्हे जो काम दिया था उससे ज्यादा काम कर दिया | तुमने सुलोचना ही नहीं अपितु दीर्घा का भी कल्याण कर दिया |”

“हे मातंगो , मैंने तुम्हे ‘वास्तविकता’ के बारे में बताया |” हनुमान जी ने सुलोचना की कथा को विराम दिया |

यह सोचकर की यजमान जान्किरुपा की आत्मा अब शुद्ध हो गई थी , बाबा मातंग खड़े हुए और उन्होंने यजमान के लिए अर्पण की विधि शुरू करनी चाही | किन्तु यजमान के मन में अभी हनुमान जी के लिए एक प्रश्न था | उसने पुछा – “हे प्रभु , सुलोचना का क्या हुआ? दीर्घा के वहां से आने के बाद सुलोचना की देह के साथ क्या हुआ, कृपा इस बारे में भी बताएं |”

“हनुमान जी ने उत्तर दिया – “हे मातंगो , जैसे ही दीर्घा की आत्मा सुलोचना की देह से निकली, सुलोचना की आत्मा ने वह देह धारण कर ली |

“हे मातंगो , ध्यान से सुनो | तुम इस विश्व का एक सुन्दर रहस्य जानने जा रहे हो | जैसे जैसे मैं ये शब्द बोलूं , उस दृश्य की कल्पना करना |

“मैं सुलोचना के कक्ष में एक साधू के रूप में उपस्थित हूँ | उस समय दीर्घा की आत्मा सुलोचना की देह में है | मैं उसको उस वास्तविकता से नाता तोड़ने के लिए कह रहा हूँ |

“वह सफलतापूर्वक ऐसा करके विष्णुलोक पहुँच जाती है |

“उसी क्षण सुलोचना की आत्मा जिसे इंद्रदेव ने स्वपनलोक में व्यस्त कर रखा था , उस देह में आ जाती है | और सुलोचना मुझसे कहती है – “बाबा , मैं इस वास्तविकता से नाता नहीं तोड़ सकती | मैं अपने माता पिता को नहीं छोड़ सकती | मैं अपने परिवार को नहीं छोड़ सकती | मैं ऐसा नहीं कर सकती |”

“हे मातंगो , क्या तुम्हे वह सुन्दर रहस्य समझ में आया ? दीर्घा तो कब की विष्णुलोक पहुँच चुकी थी | अब सुलोचना की आत्मा सुलोचना की देह में थी जो कह रही थी – “बाबा , मैं इस वास्तविकता से नाता नहीं तोड़ सकती | मैं अपने माता पिता को नहीं छोड़ सकती |”

“मैंने सुलोचना को उत्तर दिया – “मेरे बच्चे, तुम्हे इस वास्तविकता से पीछा छुड़ाने की आवश्यकता नहीं है | मैं तो केवल मजाक कर रहा था | तुम दीर्घा नहीं हो | तुम सुलोचना हो | मैं गलत था | मैं तुम्हे पवित्र भभूत दूंगा जो मैंने केवल तुम्हारे लिए बनायी है | तुम इस भभूत को सोने से पहले अगले 7 दिन तक अपने माथे पर लगाना | मैं वादा करता हूँ , तुम्हारी सारी समस्या हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगी | तुम आज के बाद वह दर्द और संघर्ष नहीं झेलोगी |”

“हे मातंग जनों , मैं जब उसके घर से निकल आया तो वह अपनी माँ से बोली – “माँ, वे बाबा बहुत अजीब और रहस्यपूर्ण हैं | वे जानते थे कि मैं क्या सपने देख रही हूँ | पहले तो उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि मैं सुलोचना नहीं , दीर्घा हूँ | और फिर वे बोले कि वे गलत थे |”

“उसने उस भभूत को अगले 7 दिनों तक अपने माथे पर लगाया | उसकी समस्या पूर्णतः ख़त्म हो गई थी क्योंकि अब उसकी देह में केवल एक आत्मा थी | उसने और उसकी माँ ने सोचा कि समस्या उस भभूत से समाप्त हुई है | लेकिन समस्या इसलिए समाप्त हुई कि मैंने दीर्घा की आत्मा को उस वास्तविकता से बाहर निकाल दिया | अगर मैं उसे भभूत न देता तो वह पूरा जीवन दीर्घा और शर्मीला के बारे में सोचती रहती | और फिर उसको यह एक और नई समस्या हो जाती |” हनुमान जी ने सुलोचना की कथा को पूर्ण किया |

वहां पर उपस्थित युवा मातंगों के मुह खुले के खुले रह गए | बाबा मातंग ने अब यजमान जानकिरुपा के लिए अर्पणं की प्रक्रिया प्रारंभ की |

[सेतु नोट : हनुमान जी द्वारा इस अध्याय में बताया गया वह सुन्दर रहस्य क्या है ? आप इस भ्रम में हैं कि आपकी आत्मा आपके जन्म से ही यहाँ है | लेकिन वास्तव में आपकी आत्मा दीर्घा की तरह एक उन्नत आत्मा हो सकती है जिसे कुछ दिन पहले ही यहाँ पर इस देह को ठीक करने भेजा गया हो? ऐसा संभव है | जो आत्मा एक जन्म से दुसरे जन्म लेते हुए शुरू से ही यहाँ है उसे 'स्थायी आत्मा' कहा जाता है | वह आत्मा जो श्री विष्णु जी द्वारा किसी ख़ास उद्देश्य से अस्थायी तौर पर यहाँ भेजी जाती है उसे कहते हैं 'प्रवासी आत्मा' | आप 'स्थायी आत्मा' हैं या 'प्रवासी आत्मा'? आपके पास यह पता लगाने का कोई रास्ता नहीं है |]

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print